HISTORY

B.A.(Hon's) PART-II

Paper-IV (History of Modern Asia(China & Japan))

Unit-II (chinese communist revolution)

Dr. GUDDY KUMARI

(Guest Lecturer), History Deptt.

A.N.D. College, Samastipur

Lecture Series - 50

"चीन में साम्यवादी आंदोलन का उद्भव"

1917 ई की रूस की बोल्शेविक क्रांति एक ऐसी महत्वपूर्ण घटना थी जिसका प्रभाव समस्त विश्व पर पड़ा। इसने समस्त संसार में नई विचार उत्पन्न किए। चीन पर इस क्रांति का प्रभाव विशेष रूप से पड़ा। 1919 ई के पेरिस के शांति सम्मेलन में पश्चात्य राष्ट्रों ने चीन के साथ जो सलूक किया, उससे संपूर्ण देश में निराशा फैल गई और चीन के लोग समझने लगे कि चीन का कल्याण बोल्शेविक विचारधारा अपनाने में ही है। सोवियत रूस के प्रति चीन में अपार सहानुभूति पैदा हुई और प्रबुद्ध चीनी सम्यावाद की ओर आकृष्ट होने लगे। पिकिंग के राष्ट्रीय विश्वविद्यालय के कुछ अध्यापकों और छात्रों, जिसमें माओत्से तुंग भी था, ने 1919 ई में चीनी साम्यवादी दल (कुंगचानतांग) स्थापित किया। 4 मई 1920 को इस दल का वर्षगांठ बड़े धूमधाम से मनाई गई। अंतरराष्ट्रीय साम्यवादी संगठन कोमिन्तर्न के एक कार्यकर्ता ग्रेगोरी बोहतिन्स्की ने इसके प्रथम अधिवेशन की अध्यक्षता की और इस अंतरराष्ट्रीय साम्यवादी संगठन को चीनी साम्यवादी दल के साथ मिला दिया। अगले ही वर्ष कई प्रांतों में इस पार्टी की शाखाएं खुल गई और 1921 ई में इन संस्थाओं का प्रथम

Dr Guddy Kumari (A.N.D College)

सम्मेलन शंघाई में हुआ। विदेशी अधिपत्य से चीन को मुक्ति दिलाना सम्मेलन का प्रथम लक्ष्य घोषित किया गया।

चीनी दल कुओमितांग पर साम्यवाद का प्रभाव:–

साम्यवादी विचारधारा ने चीन के उदारवादी राष्ट्रवादियों को भी प्रभावित किया। इस समय चीन में जो राष्ट्रवादी सरकार थी, उसका नेता डॉ सन्यात सेन विदेशी सहायता प्राप्त कर चीन को संगठित करना चाहता था। लेकिन पश्चिम के साम्राज्यवादी राज्यों ने उसे किसी प्रकार की मदद नहीं दी। अतः वह सोवियत संघ की ओर आकृष्ट हुआ। सोवियत संघ की नई क्रांतिकारी कम्युनिस्ट सरकार ने चीन के प्रति अपार सहानुभूति का प्रदर्शन किया और चीन को हर तरह की मदद का आश्वासन दिया। उसने चीन को वह सारे इलाके वापस कर देने का वचन दिया जिन्हें जार की सरकार ने उससे छीना था। अगस्त 1921 में चीनी कम्युनिस्ट पार्टी की बैठक के लिए नियुक्त कोमिन्तर्न के प्रतिनिधि में मेरिंग ने सन्यात सेन से मुलाकात की। इस मुलाकात का सन्यात सेन पर गहरा असर पड़ा और उसने मान लिया कि साम्यवादी विचारधारा शोषित जनता की सबसे बड़ी मददगार हो सकती है। अतः उसने सोवियत संघ से संपर्क संबंध बनाना शुरू किया और रूस से बहुत से सलाहकार चीन आए। जिन्होंने कुओमिनतांग पार्टी तथा चीनी सेना का पुनर्गठन किया।

मजदूरों और किसानों का संगठन:–

उन दिनों कुओमीणतांग और चीनी साम्यवादी दल में रूसी प्रभाव के कारण काफी तालमेल रहा। रूस के साम्यवादी विचारकों का मत था कि चीन जैसे अर्ध औपनिवेशिक देश में क्रांति का प्रथम लक्ष्य बुर्जुआ लोकतांत्रिक क्रांति द्वारा इस अराजक स्थिति को खत्म करना। इसीलिए उन्होंने चीनी कम्युनिस्ट पार्टी को कुओमितांग के साथ मिलजुल कर काम करने का परामर्श दिया लेकिन चीनी कम्युनिस्ट अपने संगठन को सुदृढ़ करने के लिए काफी सक्रिय रहे। वे किसानों और मजदूरों के मध्य काम करते रहे और उन्हें संगठित करते रहे। शंघाई के कम्युनिस्ट

Dr Guddu Kumari (A.N.D College)

पार्टी के प्रथम सम्मेलन में राष्ट्रीय स्तर पर मजदूरों के संघ बनाने का कार्यक्रम निश्चित किया गया। एक मजदूर संगठन कायम हुआ, जिसमें शुरू में अधिकतर जहाजी मजदूर थे। 1921 के अंत में इस संघ ने वेतन बढ़ाने की मांग की और न माने जाने पर हांगकांग के ब्रिटिश शासन ने संघ को गैरकानूनी घोषित कर दिया। इस पर इस कार्य के विरोध में और कई हड़ताल हुई जिससे सारा कारोबार ठप पड़ गया। अंत में विदेशी शासन को झुकना पड़ा और वेतन में 20% की वृद्धि करनी पड़ी।

कम्युनिस्ट लोग किसानों को भी संगठित करने लगे। सितंबर 1922 में किसान नेता फेंग पांग ने किसानों के 500 संघ बनाएं। 1923 तक किसान संगठन काफी मजबूत हो गया और वे लगान में कमी तथा जमीदारी उन्मूलन की मांग करने लगे। किसानों का आंदोलन दिन प्रतिदिन शक्तिशाली होता गया। 1925 ई में डॉ सेन के मरते ही माओत्से तुंग ने हुनान में एक किसान आंदोलन चला दिया। इस आंदोलन ने भयानक रूप धारण कर लिया और जमींदारों को उखाड़ फेंका। झुंड के झुंड किसान जमींदारों के घर में घुसकर उनके आनाज लूटने लगे। कई जगहों पर उन्होंने कब्जा कर लिया और उनकी संपत्ति जब्त कर ली।

च्यांग काई शेक द्वारा कम्युनिस्टों का विरोध:–

इन घटनाओं से च्यांग काई शेक को साम्यवादियों के प्रति घृणा उत्पन्न हो गई और वह उनका कट्टर विरोधी बन गया। कम्युनिस्टों पर कड़ी पाबंदियां लगा दी गई। उसने 1927 ई में कम्युनिस्टों को कुचलने का निश्चय किया और उनके रूसी सलाहकारों के खिलाफ आवाज उठाई। फिर भी कम्युनिस्टों ने अपना कार्य जारी रखा। उन्होंने बैंकों, कारखानों और दुकानों पर कब्जा करना शुरू कर दिया। उनके प्रबंध के लिए अपनी समितियां स्थापित कर दी। किसानों ने जमींदारों की जिंदगी हराम कर दी। कम्युनिस्टों के उग्रवादी नीति के कारण चीन के अन्य वामपंथी नेता उनसे बहुत चिढ़ गए और उनसे अपना संबंध विच्छेद करने लगे। इस समय सोवियत संघ के नेताओं ने माओत्से तुंग को ऐसा करने से मना किया लेकिन वह नहीं माना और अपना काम जारी रखा।

Dr Guddu Kumari (A.N.D college)

वामपंथी दल में इस फूट का फायदा च्यांग काई शेक ने उठाया और उसने तुरंत कम्युनिस्ट दल को कुचलने का कदम उठाया और उसने सन्यात सेन के एख संबंधी से शादी कर अपनी स्थिति को और अधिक सुदृढ़ कर ली। अब कुओमितांग दल में कम्युनिस्टों के लिए कोई जगह नहीं रहा। कुछ कम्युनिस्ट नेताओं ने बड़े–बड़े शहरों के श्रमिकों को संगठित कर वहां मजदूर के शासन की योजना बनाई किंतु माओत्से ने उनके विपरीत गांव में जाकर किसानों का संगठन शुरू किया और उन्हें क्रांति का वाहन बनाया। अपने दल के कार्य क्षेत्र को शहरों से ग्रामों की ओर लाना उसकी सुझबुझ का प्रतीक था। उन्होंने गांव में विद्यालय, अस्पताल, छोटे–छोटे करखाने खोलें। गोष्ठीयां आयोजित की और समाचार पत्र और पुस्तकें प्रकाशित की। अफीम का व्यापार रोका। 18 वर्ष की उम्र के व्यस्कों को मत देने का अधिकार दिया। लेकिन कम्यूनिस्टों ने भूमि की राष्ट्रीयकरण की नीति नहीं बनाई, बल्कि भूमि को किसानों में बांटा और उनमें सहकारिता को बढ़ावा दिया। उसने अपनी अलग सेना संगठित की तथा एक शासन तंत्र की स्थापना भी की। इस प्रकार चीन में एक साम्यवादी क्षेत्र कायम हो गया। 1931 के अंत तक लगभग 9 करोड़ जनता इसके सदस्य हो गए थे और 1 नवंबर 1931 को उन्होंने रुईचीन में अपना पहला अखिल चीनी सोवियत सम्मेलन बुलाया। कम्युनिस्टों को नष्ट करने के लिए च्यांग काई शेक ने 1933 में पूरी ताकत लगा दी। किसी पर भी कम्युनिस्ट होने का शक होता तो वह उसे सीधे फांसी के तख्ते पर लटका देता। च्यांग काई शेक के इस अत्याचार से माओत्से तुंग 1936 में दुर्गम यात्रा कर अपने साथियों के साथ शेन्सी चला गया और वही से कुओमितांग से लोहा लेने की तैयारी करने लगा।

च्यांग काई शेक से कम्युनिस्टों द्वारा समझौता का प्रयास:–

जिस समय कुओमितांग और कम्युनिस्टों के बीच संघर्ष चल रहा था। उस समय जापान चीन पर आक्रमण कर चीन को तबाह कर रहा था। तथा चीनी भूमि पर अधिकार करता जा रहा था। इस पर माओत्से तुंग ने च्यांग काई शेक से आपस में समझौता कर जापान से मुकाबला करने का प्रस्ताव रखा लेकिन जिद्दी च्यांग काई

Dr Guddy Kumari (A.N.D College)

शेक ने इसे ठुकरा दिया। लेकिन जब जनता भी इसकी मांग करने लगी तो च्यांग काई शेक ने कम्युनिस्टों से 10 फरवरी 1937 को समझौता कर लिया। इस समझौते के बाद दोनों दल के लोग मिलकर जापान के विरुद्ध लड़ने लगे लेकिन दोनों दलों में सद्भावना नहीं थी। दोनों के दृष्टिकोण में भी जमीन आसमान का अंतर था। फिर भी वह संयुक्त रूप से जापान के विरुद्ध लड़े। इसमें साम्यवादी दल काफी सफल हुआ।

लेकिन च्यांग काई शेक को साम्यवादीयों की सफलता अच्छी न लगी और वे जापान के विरुद्ध लड़ने के बजाय साम्यवादियों को ही खत्म करने में जुट गया। जिससे चीन की हालत और बिगड़ती गई। इसी बीच अगस्त 1945 में जापान द्वितीय विश्व युद्ध में हार गया और चीन पर आक्रमण खत्म हो गया। तब चीन की सत्ता हथियाने के लिए दोनों दलों में संघर्ष की नौबत आ गई। लेकिन अमेरिका के राजदूत मार्शल ने दोनों में समझौता करा दिया। लेकिन इस समझौते को च्यांग काई शेक ने उल्लंघन करना शुरू कर दिया और फरवरी 1947 में दोनों दलों के बीच युद्ध छिड़ गया। इस गृह युद्ध में च्यांग काई शेक हर तरह से हारने लगा और जनवरी 1949 ईस्वी में अपने पद से त्यागपत्र दे दिया। अप्रैल 1949 ई तक गृहयुद्ध का अंतिम दौर चला और चीन के लगभग संपूर्ण इलाकों पर कम्युनिस्टों का अधिकार हो गया और 21 नवंबर 1949 ई को माओत्से तुंग ने चीन के सभी दल के प्रतिनिधियों को बुलाकर चीनी गणतंत्र की स्थापना की घोषणा कर दी। इस प्रकार चीन की राष्ट्रीय एकता स्थापित करने में कम्युनिस्ट दल को असाधारण रूप से सफलता प्राप्त हुई और सारा चीन साम्यवादी हो गया और प्रगति के पथ पर पंख लगाकर दौड़ पड़ा।

!!!!!!!!!!! धन्यवाद !!!!!!!!!!!!!

Dr Guddy Kumari (A.N.D College)